Peer Reviewed Refereed
and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - XI, Issue - II, April - June - 2022
ENGLISH / HINDI

Impact Factor / Indexing
2020 - 6.306
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

21-22

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - XI Issue - II April - June - 2022

ENGLISH / HINDI

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2020 - 6.306
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

The information and views expressed and the research content published in this journal, the sole responsibility lies entirely with the author(s) and does not reflect the official opinion of the Editorial Board, Advisory Committee and the Editor in Chief of the Journal **"AJANTA"**.

Owner, printer & publisher Vinay S. Hatole has printed this journal at Ajanta Computer and Printers, Jaisingpura, University Gate, Aurangabad, also Published the same at Aurangabad.

**Printed by**

Ajanta Computer, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

**Printed by**

Ajanta Computer, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Cell No. : 9579260877, 9822620877, Ph. No. : (0240) 2400877

E-mail : ajanta6060@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

**AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - Impact Factor - 6.306** **(www.sjifactor.com)**

# CONTENTS OF HINDI


| अ.क्र. | लेख और लेखकके नाम | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| १ | भारत की विदेश नीति और उद्देश्य<br>**डॉ. सविता व्ही. रुक्के** | १-४ |
| २ | भारत नेपाल सम्बन्ध<br>**डॉ. पी. जे. गोटे** | ५-७ |
| ३ | भारत अमेरिका वर्तमान संबंध<br>**कु. सपना संजय गोटे** | ८-११ |
| ४ | भारत और बांग्लादेश विदेश नीति<br>**डॉ. फिरोज एस. खान** | १२-१४ |
| ५ | सार्क संगठन का एक सिंहावलोकन<br>**प्रा. डॉ. विलास अबा गायकवाड** | १५-१८ |
| ६ | भारत की विदेश नीति के निर्धारण तत्व<br>**प्रा. डॉ. अतुल नारायण खोटे** | १९-२१ |
| ७ | भारत की विदेश नीति में नेहरु की भूमिका<br>**डॉ. कोनेरु बाबन्ना डुमलवाड** | २२-२६ |

VOLUME - XI, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2022
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.306 (www.sjifactor.com) CC-16

# १. भारत की विदेश नीति और उद्देश्य

**डॉ. सविता व्ही. रुक्के**
हिंदी विभाग प्रमुख, मातोश्री शांताबाई गोटे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वाशीम.

विश्व के प्राचीन सभ्यता और संस्कृती में भारत का स्थान सर्वोपरी है. प्राचीन काल से भारत की विदेश नीति स्वतंत्र रही है. स्वतंत्र भारत की विदेश निती में भारतीय हितो को ध्यान में रखा गया है. किसी देश के विदेश नीति अपने राष्ट्रीय हितो की रक्षा करने के लिए और अंतरराष्ट्रीय संबन्धो के वातावरण में अपने लक्षो को प्राप्त करने के लिए बनाई गई नीति है. विदेश नीति दूसरे देशो के साथ आर्थिक राजनैतिकए सामाजिक तथा सैनिक विषयो पर पालन की जानेवाली नितियों का समुच्चय है. प्राचीन काल में भी भारत के समस्त विश्व के साथ व्यापारिकए सांस्कृतिक व धार्मिक संबंध रहे है. समय के साथ भारत का स्वरूप बदलता गया ऐसा होने पर भी वैश्विक तोर पर भारत के संबंध सदा अच्छे बने रहे.

किसी भी देश कि विदेश निति इतिहास से संबंधित होती है. भारत कि विदेश नीति भी इतिहास और स्वतंत्रता आंदोलन से संबधित है. भारत की विदेश निती भारतीय स्वतंत्रता से उपजी है. शांतीपूर्ण सहअस्तीत्व और विश्वशांती के वीचारों को लेकर चलता है. यह विचार महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी के है. साथ में भारत की विदेश नीती में उपनिवेशवादए साम्राज्यवादए एवं रंगभेद की नीति का विरोध करता है. यह चिंतन राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की देन है. भारत जनसंख्या की दृष्टी से विश्व में दूसरे स्थान पर आता है. भारत दुनिया के सबसे बडे लोकतांत्रिक व्यवस्थावाला देश है. इसकी अर्थव्यवस्था बढती हुई अर्थव्यवस्था है.

स्वतंत्रता के बाद भारत के अधिकांश देशो के साथ अपने संबंध सौहार्दपूर्ण बनाये वैश्विक मंच पर भारत सदा सक्रिय रहा है. १९९० के बाद भारत ने आर्थिक तौर पर विश्व को प्रभावित किया. विश्वशांती के लिए निरंतर प्रयास करता रहा.

**भारत की नीती गुटनिरपेक्षता**

२९ अप्रैल १९५४ भारत चीन समझौते के अंतर्गत पांच सिद्धांत

१. एक दूसरे की प्रादेशिक अखंडता तथा सर्वोच्च सत्ता के लिए पारस्पारिक सम्मान की भावना
२. एक दूसरे के भूभाग पर आक्रमण न करना.
३. एक दूसरे के आंतरिक मामलो में हस्तक्षेप न करना.
४. समानता और पारस्पारिक लाभ.
५. शांतीपूर्ण अस्तित्व

पांच सिद्धांत पंचशील तत्व है.

हमारा संविधान भी शांतीपूर्णता की बात करता है. शांती ने सदैव निशस्त्रीकरण की नीति का समर्थन किया है. एक देश का दूसरे देश के साथ सामाजिकए आर्थिकए राजनीतिकए कुटनीतिक तथा सैन्यसंबन्धो का निर्धारण करना जिसमे राष्ट्रीय हितों की प्रधान तथा आवश्यक रूप से निहित हो. विदेश नीति का सूक्ष्म अध्यन कौटिल्य की पुस्तक अर्थशास्त्र में भी किया है. स्वतंत्रता से पूर्व विदेशी विभाग की स्थापना १९२७ में की गई जिसके अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे.

**भारत की विदेश नीति को निर्धारित करनेवाले तत्व**

१. भौगीलिक तत्व.
२. राष्ट्रीय हित.
३. आर्थिक और सैनिक तकनिकी तत्व.

४. रंगवाद व उपनिवेशवाद आदी का प्रभाव.
५. व्यक्ती के व्यक्तित्व से प्रभावित:
६. ऐतिहासिक लोकतांत्रिक परंपराओ का प्रभाव.
७. आंतरिक और घरेलू परिस्थितीयो का प्रभाव.

**विशेषताऐं**

१. शांतीपूर्ण सहअस्तीत्व.
२. वार्ताओ समझौते की नीति.
३. आंतरराष्ट्रीय विवादो का शांतीपूर्ण साधनो से सुलझाने की नीति.
४. गुटनिरपेक्षता की नीति.
५. पूर्व की और देखो नीति.
६. लुक आफ्रिकी नीति.
७. अंतरराष्ट्रीय शांती व विश्व संघ की स्थापना.

**भारत की विदेश नीति में कम से कम निम्नलिखित चार मुख्य उद्देश्य हैं**

**१ :** भारत की विदेश नीति का पहला और व्यापक उद्देश्य-किसी अन्य देश की तरह-अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित का "राष्ट्रीय हितों "का दायरा काफी व्यापक है. उदाहरण के लिए हमारे विषय में इसमें शामिल है :क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए हमारी सीमाओं की सुरक्षा, सीमा पार आतंकवाद का मुकाबला करना, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा. संक्षेप में, पहला उद्देश्य भारत को पारंपरिक और गैर-पारंपारिक खतरों से बचाना है.

**२ :** दूसरा उद्देश्य एक बाहरी परिवेश बनाना है जो समावेशी घरेलू विकास के लिए अनुकूल हो. मैं विस्तृत रूप से :हमें विदेशी भागीदारों, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, आधुनिक प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के रूप में पर्याप्त बाहरी आदानों की आवश्यकता है. ताकि हम भारत में एक विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा विकसित कर सकें, ताकि मेक इन इंडिया, स्किल्स इंडिया जैसे हमारे कार्यक्रमों को विकसित किया जा सके. डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी, सफल हो सकते हैं, ताकि हमारे पास उन्नत कृषि और आधुनिक रक्षा उपकरण आदि हों. हाल के वर्षों में भारत की विदेश नीति के इस पहलू पर अतिरिक्त ध्यान केंद्रित करने के परिणामस्वरूप राजनीतिक कूटनीति के साथ आर्थिक कूटनीति को एकीकृत करके विकास की कूटनीति हुई है.

**३ :** पिछले 72 वर्षों में भारत एक गरीब विकासशील देश से उभरती हुई अर्थव्यवस्था में विकसित हुआ है और अब इसे एक महत्वपूर्ण वैश्विक अगुवा के रूप में गिना जाता है. इसलिए तीसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत की आवाज वैश्विक मंचों पर सुनी जाए और भारत आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, भेदभाव रहित वैश्विक व्यापार वैश्विक शासन की संस्थाओं के सुधार, जो दुनिया के बाकी के रूप में ज्यादा के रूप में भारत को प्रभावित करते हैं. जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर विश्व जनमत को प्रभावित करने में सक्षम हो.

**४ :** भारत के 30 मिलियन सशक्त प्रवासी हैं जिनमें अनिवासी भारतीय और भारतीय मूल के व्यक्ति शामिल हैं, जो पूरेविश्व में फैले हुए हैं. पिछले कुछ वर्षों में यह मेजबान देशों में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा है। यह भारत और अन्य देशों के बीच मजबूत कड़ी प्रदान करता है और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है. चौथा और एक महत्वपूर्ण उद्देश्य भारतवंशियों को शामिल करना और विदेशों में उनकी उपस्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करना है, जबकि साथ ही यथासंभव उनके हितों की रक्षा करना है.

**विदेश निती : मौलिक सिद्धांत**

**इन मौलिक सिद्धांतों में शामिल हैं**

1. पंचशील,या पांच गुण जिन पर 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षर किए गए जो औपचारिक रूप से चीन और भारत के तिब्बत क्षेत्र के बीच व्यापार पर समझौते में प्रतिपादित किए गए थे, ने और बाद में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय

संबंधों के संचालन के आधार के रूप में कार्य करने के लिए विकसित हुए. ये पांच सिद्धांत हैं) -i)दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान, (ii)परस्पर गैर आक्रामकता, (iii)परस्पर गैर हस्तक्षेप, (iv)समानता और पारस्परिक लाभ, और )v)शांतिपूर्ण सह अस्तित्व.

2. वसुधैव कुटुंबकम)विश्व एक परिवार है (इससे संबंधित है सबकासाथ, सबका विकास, सबका विश्वास की अवधारणा. दूसरे शब्दों में समूचा विश्व समुदाय एक ही बड़े वैश्विक परिवार का एक हिस्सा है और परिवार के सदस्यों को शांति और सद्भाव रखना चाहिए, मिलजुल कर काम करना चाहिए और एक साथ बढ़ने और पारस्परिक लाभ के लिए एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए.

**3. भारत विचारधाराओं के पारगमन और व्यवस्थाओं में परिवर्तन के विरूद्ध है**

भारत लोकतंत्र में विश्वास करता है और समर्थन करता है; हालांकि भारत का विचारधाराओं के पारगमन में विश्वास नहीं है. भारत इसलिए चाहे वह लोकतंत्र हो, राजशाही हो या सैन्य तानाशाही सरकार के साथ खड़ा है. भारत का मानना है कि अपने नेताओं को चुनना या हटाना और शासन का रूप बरकरार रखना या बदलना देश की जनता पर निर्भर है. उपर्युक्त सिद्धांत का विस्तार करके भारत किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा बल या अन्य साधनों के उपयोग से किसी विशेष देश में सत्ता परिवर्तन या क्षेत्रीय अखंडता के उल्लंघन के विचार का समर्थन नहीं करता.इराक, लीबिया, सीरिया में अमेरिकी हस्तक्षेप अथवा जॉर्जिया, यूक्रेन आदि में रूस का हस्तक्षेपइसके साथ ही, भारत जहां भी क्षमता मौजूद है, वहां लोकतंत्र को बढ़ावा देने में संकोच नहीं करता; यह क्षमता निर्माण में सक्रिय रूप से सहायता प्रदान करने और लोकतंत्र की संस्थाओं को मजबूत करके किया जाता है, हालांकि, संबंधित सरकार की स्पष्ट सहमति से.)पूर्व अफगानिस्तान(

**4. भारत एकतरफा प्रतिबंधों / सैन्य कारवाई यों का समर्थन नहीं करता**

भारत किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा किसी अन्य देश के विरूद्ध प्रतिबंधसैन्य कार्रवाई करने के विचार का समर्थन नहीं करता है जब तक कि अंतर्राष्ट्रीय सर्वसम्मति के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र द्वारा इन प्रतिबंधों कार्रव को मंजूरी नहीं दी जाती . इसलिए भारत केवल ऐसे शांति-सैन्य अभियानों में योगदान देता है जो संयुक्त राष्ट्र शांति सेनाओं का हिस्सा हैं।

(भारत ने लगभग 195,000 सैनिकभेजे है, जो किसी भी देश से भेजी गई सबसे बड़ी संख्या हैं, इसने 49 से अधिक मिशनों में भाग लिया और 168 भारतीय शांतिरक्षकों ने संयुक्त राष्ट्र मिशनों में सेवा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र मिशनों के लिए प्रख्यात बल कमांडरभी उपलब्ध कराएं हैं और यह जारी है।

**5. हस्तक्षेप :नहीं, मध्यवर्तन :हां**

भारत का दूसरे देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने में विश्वास नहीं है। तथापि, यदि किसी देश द्वारा किसी अधिनियम-निर्दोष या जानबूझकर भारत के राष्ट्रीय हितों को अतिक्रमण किया जाता है, तो भारत त्वरित और समय पर हस्तक्षेप करने में संकोच नहीं करता है। जब मैं कहूंगा कि मध्यवर्तन हस्तक्षेप से गुणात्मक रूप से भिन्न है, विशेषकर जब संबंधित देश के अनुरोध पर मध्यवर्तन किया जाता है तो आप मुझसे सहमत होंगे। )उदाहरण :बांग्लादेश 1971, श्रीलंका में आईपीकेएफ )1987-90), मालदीव )1988)।

**6. आक्रामकता पर रचनात्मक जुड़ाव**

भारत, आक्रामकता पर रचनात्मक जुड़ाव की नीति की हिमाकत करता है. इसका मानना है कि हिंसक जवाबी कार्रवाई और टकराव ही मामलों को उलझा सकता है. युद्ध कोई समाधान नहीं है; हर युद्ध के बाद विरोधी दल अंतत वार्ता की मेज पर आते हैं जिसके द्वारा समय पर बहुत नुकसान पहले ही किया जा चुका होता है. यह विशेष रूप से पाकिस्तान पर लागू होता है-भारत में लक्षित राष्ट्र प्रायोजित आतंकवाद का मूल।

हालांकि,बातचीत की नीति को भारत की कमजोरी के रूप में गलत समझा जा सकता है. भारत द्वारा की गई प्रत्येक और वक्तव्य पर हमारे धैर्य का परीक्षण किया जाता है. सितंबर 2016 में पाकिस्तान के कब्जे वाले भारतीय क्षेत्र में

आतंकी -लॉन्च पैड को निशाना बनाने के लिए सर्जिकल स्ट्राइक ऐसा ही एक उदाहरण है। पुलवामा आतंकवादी हमले के प्रतिशोध में फरवरी 2019 में बालाकोट में आतंकवादी शिविरों में हवाई हमला एक और उदाहरण है.

**7. सामरिक स्वायत्तता :साझेदारी-हां, गठजोड़ :नहीं**

निर्णय लेने और सामरिक स्वायत्तता की स्वतंत्रता भारत की विदेश नीति की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है। इस प्रकार भारत साझेदारी में विश्वास करता है और गठबंधनों, विशेष रूप से सैन्य गठबंधनों से दूर है.

**8. वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक सहमति**

भारत विश्व व्यापार व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकार, वैश्विक शासन जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक बहस और वैश्विक सहमति की हिमाकत करता है.

**बदलती भारतीय विदेश नीति**

- भारत की वर्तमान विदेश नीति की सबसे खास विशेषता यह है कि इसमें पूर्व की सभी नीतियोंकी अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृत्ति सबसे अधिक है.
- भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हो रहा है.
- डोकलाम में भारत की कार्रवाई और वर्ष 2016 में उरी आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक भारतीय नीति के प्रमुख उदाहरण हैं.
- कई जानकारों का मानना है कि भारत की वर्तमान विदेश नीति में विचारों और कार्रवाई की स्पष्टता दिखाई देती है.
- बदलते वैश्विक राजनीतिक परिवेश में भारत अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिये किसी भी औपचारिक समूह पर निर्भरता को सीमित कर रहा है.
- भारत ने अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने का एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और अमेरिका तथा रूस के साथ भारत के संबंध इस तथ्य के प्रमुख उदाहरण हैं.

**आगे की राह**

- यद्यपि कार्रवाई की स्पष्टता एक स्वागत योग्य कदम है, परंतु जटिल मुद्दों और नीतियों के लिये बारीक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी.
- अमेरिका पर अत्यधिक निर्भरता से भारत की रणनीतिक स्वायत्तता में कमी आ सकती है, अतः आवश्यक है कि संबंधों में संतुलन बनाए रखा जाए.
- विदेश नीति का घरेलू राजनीतिकरण एक चिंता का विषय है. जिसके चलते विदेश नीति का निर्णय लेते समय नेतृत्व को घरेलू कारकों का ध्यान देना पड़ता है और विदेश नीति प्रभावित होती है.

भारत की विदेश नीती अपने आप में सराहनीय हैं जिसके कारण भारत का विदेशो के साथ संबंध हमेशा अच्छे बने रहे हैं. भारत की विदेश निती उसे विश्व में शांती स्थापित करने में योगदान देती रही है.

**संदर्भ सूची**

१. भारतीय विदेश नीति – भूमंडलीकरण के दौर में, चौथा संस्करण. – राजेश मिश्रा
२. भारत की विदेश नीति – संपादक सुमित गांगुली
३. भारतीय विदेश नीति – पी. सी. जैन
४. भारतीय विदेश नीति – जे. एन. दीक्षित
५. भारत की विदेश नीति: मुख्य उद्दिश्यो, मौलिक सिद्धांतो और वर्तमान प्राथमिकता का परिदृश्य – अचल कुमार मल्होत्रा